धोरां रो संगीत

(राजस्थानी भाषा के गीतात्मक प्रेमाख्यान)

लेखक :

डा० मनोहर शर्मा

प्रकाशक :

[illegible]

और

[illegible]

श्री अग्रसेन स्मृति भवन

P-331, कलाकार स्ट्रीट,

कलकत्ता-७००००७

श्री अग्रसेन स्मृति भवन

संक्षिप्त परिचय

उद्देश्य—सार संक्षेप रूप मे

अग्रवाल समाज के आबाल वृद्ध-वनिता को शारीरिक, आर्थिक, शैक्षणिक, सांस्कृतिक तथा आध्यात्मिक उन्नति हेतु कायिक, वाचिक, मानसिक साधन सन्निवेशित सामयिक कार्यक्रमों का अवलम्बन। समाज-सगठन के दृढीकरण हेतु आवश्यक प्रयत्न। समाजोपयोगी विभिन्न सहयोग सेवा कार्यों का सम्पादन। उद्देश्य-सम्पूर्ति हेतु समयानुकूल पूरक कार्यक्रमों का अवलम्बन।

प्रमुख प्रवृत्तियाँ

* श्री लक्ष्मीनारायण भगवान मन्दिर।
* श्री रामरक्षपाल झुनझुनवाला स्मृति पुस्तकालय।
* हिन्दी तथा अंग्रेजी टाइप तथा आशुलिपि का नि शुल्क प्रशिक्षण।
* बही-खाता लेखन का व्यवहारिक प्रशिक्षण।
* आयकर तथा बिक्रीकर कानून सम्बन्धी नि शुल्क परामर्श।
* अतिथि निवास तथा विवाह आदि सामाजिक उत्सवों मे भवन का उपयोग।
* सेवा विभाग के माध्यम से जरूरत मन्दों का राशन क्रय, शिक्षा तथा औषधोपचार हेतु सहायता।
* समाज की जरूरतमन्द ३० बहिनों को प्रतिमाह की स्थाई आर्थिक सहायता।
* वस्तु भण्डार मे बतन, बिछायत सिंहासन, छत्तर आदि की व्यवस्था।
* सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक अनुष्ठानो मे सभागार का उपयोग।
* श्री कल्याण आरोग्य सदन के सहयोग से होमियोपैथिक औषधालय द्वारा रोगियों को नि शुल्क चिकित्सा व्यवस्था।
* सत साहित्य प्रकाशन।

— oo —

प्रकाशकीय

श्री अग्रसेन स्मृति भवन समाज कल्याण कार्यों में रत एक सेवा संस्थान है। इसके अन्तर्गत संचालित पुस्तकालय में स्वस्थ तथा सामयिक साहित्य के पठन द्वारा ज्ञान का प्रसार इसका एक कार्य-क्रम है। स्वस्थ रुचि निर्माण के उद्देश्य से अन्य कार्यक्रमों के साथ हम प्रकाशनादि भी करते हैं। हमारी आकांक्षा थी कि पुस्तकालय से ऐसी कोई रचना प्रकाशित की जावे, जो जन मानस के स्पर्श द्वारा पाठकों की रुचि "साहित्य संगीत" की ओर उन्मुख करे तथा अध्ययन के आयाम को भी विस्तृत करे। भवन के रजत-जयन्ती वर्ष पर हमें यह शुभ अवसर प्राप्त हुआ है।

रजत-जयन्ती स्मारिका के सन्दर्भ में भाई कालीचरणजी केशान ने स्मारिका की एक सुनियोजित साहित्यिक परिकल्पना प्रस्तुत की। इसका उत्तरार्द्ध राजस्थानी भाषा और साहित्य 'दर्शन' के रूप में प्रकाशित हो चुका है। मेरी विनम्र सम्मति में साहित्य पारिजात-तरु को अर्घ्य रूप में सिंचन का यह एक सार्थक प्रयास है। स्मारिका के इस खण्ड में किसी प्राचीन लघु कृति के समावेश का विचार था, पर पीछे इसे स्वतंत्र प्रकाशन का रूप देने का निश्चय किया गया। परिणाम स्वरूप "धोरां रो संगीत" आपके हाथों में है।

पुस्तक में वर्णित कथाएं सदियों प्राचीन हैं। इसे राजस्थान भारती के प्रौढ़ विचारक, एवं कुशल साहित्य शिल्पी डा० मनोहर शर्मा ने सहज सुललित राजस्थानी में संगीतात्मक रूप में प्रस्तुत किया है। लेखक हिन्दी तथा राजस्थानी भाषा के जाने माने विद्वान हैं। आशा है, यह कृति आपको पसन्द आवेगी।

हमारी प्रार्थना पर श्री लक्ष्मीनिवासजी बिरला ने इस पर सम्मति तथा पं० श्रीलालजी मिश्र ने प्रस्तावना लिखने की कृपा की है। हम उनके आभारी हैं।

इस प्रकाशन में अपने साथियों से प्राप्त सहयोग के लिये मैं आभार प्रकट करता हूं। पुस्तक चयन से प्रकाशन तक भाई कालीचरणजी केशान का पूर्ण सहयोग रहा है। भवन के सभापति तथा ट्रष्टी श्री राधाकृष्णजी चमड़िया, ट्रष्टी श्री सुखदेवदासजी हरलालका तथा मंत्री श्री रामप्रसादजी सराफ की प्रेरणा उल्लेखनीय है। प्रकाशन में आर्थिक सहयोग के रूप मे हमे जिन सज्जनों से या उनके माध्यम से जो सहायता प्राप्त हुई है, उसका विवरण निम्न प्रकार है :—

(१)	श्री शुभकरणजी राजगढ़िया	रु० २१००)
(२)	„ राधाकृष्णजी चमड़िया	„ ५०१)
(३)	„ सुखदेवदासजी हरलालका	„ २५०)
(४)	„ रामप्रसादजी सराफ	„ १००)
(५)	„ बाबूलालजी गनेड़ीवाला	„ १००)
(६)	„ पुरुषोत्तमदासजी खेतान	„ १००)
(७)	„ जगदीश प्रसादजी सराफ	„ १००)
(८)	„ कालीचरणजी केशान	„ १००)
(९)	„ श्यामलाल जालान	„ १००)
		कुल रु० ३४५१)

समस्त सहयोगियों के प्रति मैं आभार व्यक्त करता हूं।

त्रुटियों के लिये क्षमा प्रार्थना के साथ

विनीत

श्यामलाल जालान, मंत्री

श्री रामरक्षपाल झुनझुनवाला स्मृति पुस्तकालय

प्रस्तावना

'धोरां री संगीत' में राजस्थान रै कुछेक घणै लोकप्रिय कथानकां नैं संगीत-रूप दियो गयो है। कई कथानक सिंध, गुजरात अर माळवै सूं सम्बन्धित भी है पण वर्तमान राजस्थान समेत यो सम्पूर्ण भू-भाग सदा सूं सांस्कृतिक इकाई समझ्यो जावै है अर यो ही कारण है कै राजस्थान री 'ख्यातां ,वातां, अर गीतां' में इणां नै पूरी आत्मीयता साथै सम्मान मिल्यो है।

प्रायः सगळा ही कथानक घणा पुराणा भी है। 'मुंज-म्रणाल', 'राणकदे-रा खेंगार' सम्बन्धी दूहा तो उत्तर-कालीन अपभ्रंश में भी मिलै है। दूजै कथानकां सूं सम्बन्धी अनेक दूहा-सोरठा मध्यकालीन राजस्थानी अथवा गुजराती में भी है, जिणां सूं परगट हुवै कै ये कथानक घणै समय सूं लोक-हृदय रा हार वणर दीपै है।

काव्य-प्रभाव नैं वधावण-सारू पुराणै कथानकां में कठै-कठै साधारण फेर-वदळ भी करयो गयो है पण उणां रै मूळ रूप नैं प्रायः ज्यूं रो त्यूं हीज राख्यो गयां है। फेर भी 'मोमल' रै चरित्र में लौकिक कथानक नैं देखतां विशेष परिवर्तन नजर आवै है।

गौण वातां नैं छोडर काव्य में कथावां रै प्रमुख प्रसंगां नैं ही ग्रहण कर्‌या गया है जिणसूं अनावश्यक विस्तार न हुवै। यो ही कारण है कै कथावां री 'वस्तु' न्यारै-न्यारै विभागां में विभक्त है।

मूळ रूप में प्रायः सगळी ही कथावां प्रेम रस सूं सम्बन्धित है पण प्रेम री निरमळता-सारू पूरो ध्यान राख्यो गयो है अर कई जगां तो उण नैं आध्यात्मिक रंग भी दियो गयो है। और तो और, 'ढोलै मरवण' री प्रेम कथा नैं भी कवि आध्यात्मिक सांचै में ढाळर पाठकां रै सांमैं एक नई रंगत पेश करी है। यो ही कारण है कै पुस्तक

रो प्रारम्भ 'मैणी-बीजाणंद' सूं हुयर उण रो समापन 'मीरांबाई' री परम भक्ति साथै हुयो है।

कवि रो अध्ययन विस्तृत है। कथावां में कई जगा जरूरत रै अनुसार लौकिक-सामग्री नैं भी संगीत में बांधर नई बानगी रै रूप में राखी गई है। जिण सूं काव्य मे नई ओप आई है।

सम्पूर्ण संकलन री प्रमुख विशेषता विविध पात्रां रो मनोवैज्ञानिक चित्रण है, जिण सूं प्रत्येक कथा पाठक रै हिरदै पर सीधो असर गेरै है। प्रायः सगळा ही कथानक दुःखान्त हुवण सूं आपणै-आप मे ही घणा मार्मिक है।

भाषा सर्वथा सुबोध अर घणी कोमल है। उण रो साहित्यिक स्वरूप भी ध्यान देवण जोग है, जिण सूं राजस्थानी भाषा री अभि-व्यंजना-शक्ति रो सहजां ही अनुमान कर्यो जा सकै है।

सब सूं बड़ी बात या है कै 'धोरां रो संगीत' मे एक साथै ही काव्य, संगीत अर चित्र कळावां रो संगम है जिण सूं प्रकाशन रै महत्व में असाधारण वृद्धि हुई है। इसी चीज प्रायः कम ही देखणै में आवै है।

राजस्थानी गद्य-पद्य मे लेखक री अनेक पुस्तकां प्रकाशित हुय चुकी है पण वा मे 'धोरां रो संगीत' एक निराळी ही चीज है। कवि अर प्रकाशक संस्थान दोनूं ही हार्दिक धन्यवाद रा पात्र है। आशा है, राजस्थानी रा प्रेमी पाठक प्रस्तुत प्रकाशन नैं समुचित सम्मान देयर आप री मातृभाषा रो मान वधासी।

दीपमालिका, २०३५ वि०

—श्री लाल मिश्र

भारतीय वाङ्मय में प्रेमाख्यानों की परंपरा अति प्राचीन काल से उपलब्ध होती है। वैदिक युग के उर्वशी-पुरुरवा आख्यान के संबंध में पेंजर का अभिमत है कि :—

It is the first Indo-European love-story known, and may even be the oldest love-story in the world.

पौराणिक तथा महाकाव्य युग में यह परम्परा अक्षुण रूप में प्रवहमान रही। नल दमयन्ती, अर्जुन-सुभद्रा, दुष्यन्त-शकुन्तला, विक्रम-उर्वशी, अग्निमित्र-मालविका आदि इसके श्रेष्ठ उदाहरण हैं। पैशाची, प्राकृत, अपभ्रंश आदि में भी इस पर यथेष्ट साहित्य रचा गया।

राजस्थानी प्रेमाख्यान साहित्य भी इसी परम्परा में अविछिन्न कड़ी है। साहित्यिक विधा के रूप में हमें इस प्रकार की रचनाएँ चौदहवीं शताब्दी से प्राप्त होती हैं, जो प्रायः अप्रकाशित रहकर शोध संग्रहालयों में सुरक्षित हैं।

कथावस्तु के आधार पर इसका वर्गीकरण लोककथात्मक, ऐतिहासिक, पौराणिक तथा काल्पनिक श्रेणी में किया जा सकता है। भाषा रचनागत दृष्टि से यह तीन रूपों में उपलब्ध है—गद्य, पद्य एवं गद्य-पद्य मिश्रित चम्पू शैली।

यद्यपि प्राचीन प्रतियों में ऐतिहासिक घटनाएँ तत्कालीन सांस्कृतिक जीवन की झांकियों प्रकृति-वर्णन आदि रचना-सौष्ठव के के साथ विद्यमान हैं, पर काल की लम्बी अवधि ने भाषा के रूप में अनेक परिवर्तन किये हैं। आज की भाषा एक विशिष्ट ढाँचे में ढल चुकी है। अपने समय के भाषा-सौन्दर्य से वेष्ठित साहित्य आज के साधारण पाठक के लिए दुरुह सा बन गया है।

प्रस्तुत रचना 'धोरां री संगीत' डा० मनोहर शर्मा की कृति है। श्री मनोहर शर्मा का राजस्थानी के प्राचीन विद्वानों की परम्परा में विशिष्ट स्थान है। 'धोरां री संगीत' सरल, सुबोध राजस्थानी में इग्यारह लोक कथात्मक एवं ऐतिहासिक आख्यानों का प्रस्तुतिकरण है। इसमें प्राचीन रचनाओं की भाव प्रवणता तथा लालित्य

के साथ सहज प्रवहमान संगीत (गेय) रूप में ढाला गया है। कवि पात्रों की मनोदशा के सूक्ष्म चित्रण में सफल हुआ है। इसमें वर्णित प्रेम विशुद्ध प्रेमतत्व पर आधारित है, जिसमें आकर्षण है संयोग के लिये तड़पन है पर कायिक वासना का प्राधान्य नहीं है। 'सैणी बीजानन्द' की सैणी चारिणी बीजानन्द के स्वर से हिरणी की तरह बँधकर भी धैर्यपूर्वक अवधि पूर्ण होने की प्रतीक्षा करती है। अवधि की समाप्ति पर भी जब बीजानन्द नहीं लौटता है तो जन्म-जन्मान्तर में मिलन की आशा संजोकर वह हिमाचल में जाकर गल जाती है। प्रेम के आध्यात्मिक रूप का यह सुन्दर प्रस्तुतिकरण है। आध्यात्मिक पक्ष के दूसरे रूप का दर्शन 'मीरा' में होता है। मीराबाई जड़-चेतन जगत को कृष्णमय देखती है और अन्त में उसी के रूप में समा जाती है।

'सागर मांही बूंद समाई अन्त नीर रो नीर।'

कायिक प्रधान प्रेम का उदाहरण 'सोहनी महिवाल' है। इसमें प्रेम की तड़पन तो है पर परकीया सम्बन्ध के कारण इसका रूप वासनामय है। वियोग दोनों के लिए असह्य है। अंधा प्रेम तूफानी नद को नहीं देख पाता और दोनों उसमें डूब जाते हैं। 'मुंज मृणाल' में कायिक आकर्षण के होने पर भी प्रेम की पट-भूमि भिन्न है। यहाँ मुंज के बलिदान में साथ रहकर मृणाल पवित्र प्रेम के आदर्श के गौरव को उद्‌भाषित करती है। 'राणकदे' तथा रूठी राणी' के रूप में उमादे एवं चारुमती का आधार ऐतिहासिक पृष्ठभूमि लेकर है। प्रेम की एकान्तता के साथ इसमें राजस्थानी आनबान के दर्शन होते हैं।

'ऊजळी तथा मरवण' लोक-कंठ-आश्रित बहुचर्चित प्रेमाख्यान हैं जो सदियों से जन-मानस में रमे हुए हैं। राजस्थान में प्रचलित यह दोहा ढोला मरवण की लोकप्रियता का उदाहरण है :—

सोरठियो दूहो भलो, भली मरवण की बात।
जोबन छायी धण भली तारां छायी रात॥

कुल मिलाकर रचना सुन्दर है और आशा है कि लोकरंजन के साथ इससे स्वस्थ तथा सुरुचिपूर्ण साहित्य-सृजन को बल मिलेगा एवं यह राजस्थानी साहित्य के प्रति लोकमानस की अभिरुचि जागृत कर सकेगी। —लक्ष्मी निवास बिरला

डा० मनोहर शर्मा

दीप

पृष्ठ संख्या

★

प्रेम संगीत

सैणी बीजानंद

बीजानद चारण सगीत विद्या मे अत्यन्त प्रवीण था और वह अपनी वीणा लिए हुए धुन के ध्यान मे गांव-गाव घूमा करता था। एकबार उसे प्यास लगी और वह किसी गाव के पनघट पर आ पहुँचा, जहाँ अनेक युवतिया पानी भर रही थीं। उनमे से एक चारण कन्या के रूप-सौन्दर्य को देखकर वह मुग्ध हो गया और उसी के घर पर अतिथि के रूप में जा टिका। कन्या का पिता वेदोजी चारण काफी धनी और प्रतिष्ठित था। साथ ही वह संगीत विद्या का प्रेमी भी था। फल यह हुआ कि कुछ ही दिनों मे उसकी पुत्री (सयणी) और वह स्वय बीजानद की गान विद्या पर मुग्ध हो गए और एक दिन वेदोजी ने बीजानद से मन की इच्छा के अनुसार भेंट मागने हेतु कहा तो बीजानद ने सयणी को पत्नी रूप मे माग लिया। इसपर वेदोजी को बडा क्रोध आया परन्तु वे वचन हार चुके थे। अत विवाह की शर्त के रूप मे उन्होंने बीजानद को एक साल मे सौ नवचदी भैंसें लाकर अपना पुरुषार्थ दिखलाने हेतु कहा। बीजानद सौ नवचदी भैंसें लाने के लिए निकल पडा। अन्य भेंट तो उसके लिए सर्वत्र तैयार थी परन्तु नवचदी भैंसें दुलभ थीं, जिनको प्राप्त करने मे उसे सालभर से ज्यादा समय लग गया। इधर सयणी अवधि की समाप्ति पर उसके विरह मे व्याकुल होकर हिमालय पर्वत पर गलने के लिए घर से निकल गई। जब बीजानद लौटकर आया तो वह भी सारा वृत्तान्त सुनकर सयणी के पीछे-पीछे हिमालय की ओर चल पडा, परन्तु सयणी वापस लौटकर नहीं आई। वह हिमालय की बर्फ मे गल चुकी थी। बीजानद ने अपनी वीणा के तार तोड दिए और ससार मे भटक गया।

****

पान पान सौरम सरसाई, कण कण मांय उजास।
अम्बर में मद - लाली छाई, पून छकी रस - रास ॥
यो संगीत निराळो
वीणा जद वाजी वीजानंद री
आमीं - वरसावू ॥१॥

जंगम थिर हो न्हावण लाग्या, सुर-धारा रै मांय।
थिर चंचल चित हालण लाग्या, अंग-अंग सरसाय ॥
अम्मर रस री माया
वीणा जद बाजी वीजानंद री
आमी - वरसावू ॥२॥

सारद नारद और तुम्बरू, निरखण लाग्या तार।
पिरथी सूं सुरगां में आवै, सुर वीणा री धार ॥
रस रो भेद न पायो
वीणा जद वाजी वीजानंद री
आमीं - वरसावू ॥३॥

तारा - मण्डळ रुक - रुक चालै, मधरी मधरी पून।
धीरां धीरां नंदी नाळा, अग जग धारी मून ॥
भीज्यो अंतस भारी
वीणा जद बाजी वीजानंद री
आमीं - वरसावू ॥४॥

अंतर रै तारां में बाजी, धन धरती री वीण।
राग-रागनी रूप दिखायो, परगट हो परवीण ॥
सोई लहरां जागी
वीणा जद वाजी वीजानंद री
आमी - वरसावू ॥५॥

****

****

बन रा जीव टेर सुण आवै, भूल सनातन वैर।
तान - तान पर हिरदो नाचै, रस-सागर ले लहैर ॥
जादू गेर्‌यो भारी
वीणा जद वाजी वीजानंद री
आमीं - वरसावू ॥६॥

धरती अम्बर बीच एकलो, आप आप में लीन।
वीणा छोड़ ओर नां दूजो, संगी चित-आसीन ॥
वो संगीत - दिवानो
सुर रै रस डोलै रमतो ध्यान में'
वीजानंद वांको ॥७॥

कूवै पर मेळो सो लाग्यो, हँस बोलै पणिहार।
चंदावदनी रूप - दिवानी, जोवन - छाई नार ॥
पिव रै रस में डोलै
सखियां मिल खोलै घूंडी प्रेम री
नैणां मद छायो ॥८॥

उड - उड जावै रंग - लैरियां, हँस - हँस बोले अंग।
तन में, मन में, रोम-रोम में, नाचै नई तरंग ॥
यो पणघट सरसावै
सखियाँ रतनाळी आ रणझोळ में
जद लाज बुहावै ॥९॥

राग-रंग मे चाव-भाव रै, बाध सवाई प्रीत।
पणिहारी गजगमनी गावै, आती - जाती गीत ॥
रस री धार चलावै
कूवै पर आवै नंदी रूप री
सज किरण सुरंगी ॥१०॥

****

****

गंगा-जमना सी मिल आवै, भोळी चतर-सुजान।
नांव सुण्यो पण रस ना चाख्यो, ना निरखी या तान ।।
चंचल मिरगानैणी
होळै सी घोळै इमरत कान में
सरसै सरमावै ।।११।।

मारग रमतो एक बटाबू, लियां विरंगा नैण।
सूक्या कंठ, काळजो सूक्यो, बोल्यो धीमा बैण।।
आकर ओक लगाई—
"पाणीड़ो प्यावो, देवी रूप री
काया कुमळावै" ।।१२।।

पाणी पी काया सरसाई, मन में जागी टीस।
नैणां रै होठां में आई, राग-रंग री तीस।।
क्यूं जिवड़ो तरसावै
छळ छळ छळकावै पाणी रूप रो
भर कनक-कटोरो ।।१३।।

भरम्यो सो, भटक्यो सो पंथी, बोल्यो एक न बैण।
नैणां में आ नाचण लाग्या, भोळा सा दो नैण।।
पंछी उडणो भूल्यो
अम्बर में जावै, पाछो आ पड़ै
चित चैन न मानै ।।१४।।

वेदोंजी री आय गुवाड़ी, पंथी बीजानंद।
छायां मांही भिखो मुळावै, मन रो दीपक मंद।।
औचक वीणा बाजी
सोगुण सोळावै दुख री रागनी
हिरदै री पीड़ा ।।१५।।

****

****

वीणा सुनकर डगमग डोल्यो, हिरणी रो संसार।
'लौ-चुग्गो लौ' नैं ले आयो, बांध प्रीत रा तार॥
सैणी आगै ऊभी
परगट अब पाछो देख्यो चांद नैं
पिरथी पर आयो ॥१६॥

बीजानंद री वीण निराळी, जादू दीन्यो गेर।
बीछड़तां काया कुमळावै, पल-पल करै हुंसेर॥
मन रो भेद न खोलै
नैणां रा प्याला भर-भर मोद में
पीवै अर प्यावै ॥१७॥

आंगण मोह्यो, भींतां मोही, मोह्या सारा ठांव।
बीजानंद री वीण बसायो, घर में दूजो गांव॥
जद बेदोजी बोल्या—
"वीणा-वरदाई, जी भर मांग ले
मन इंछ्या तेरी" ॥१८॥

आज सुफळ नैणां री बोली, अर वीणा रा गीत।
आज सुफळ जीतब संसारी, आज सुफळ रसरीत॥
बिरवो हिरदै रोप्यो
फूल्यो फळ ल्यायो, माळी मोद में
पुळक्यो सरसायो ॥१९॥

"नां मैं मांगू माणक-मोती, नां मैं मांगू खेत।
बेदोजी, संसारी सोनो, मेरे आगै रेत॥
वाचा किरपा कीनी
सुगणी सैणी रो बांधूं सेवरो
वरदान सुरंगो" ॥२०॥

****

धरती पर दावानळ भड़क्यो, अंबर कड़की गाज ।
"घर नां खेत, धेन नां छेळी, खावण नैं नां नाज ।।
क्यूं मंगता इतरायो
वेरो अब लाग्यो तेरी बीण रो
मत आव अगाड़ी" ।।२१।।

वन रो पंछी धन में आयो, नैणां छाई रैन ।
इण डाळी सूं उण डाळी पर, रंच न मानै चैन ।।
भूल्यो गीत सुरंगो
आभीं-बरसावू बाजै बीण नां
बीजानन्द डोलै ।।२२।।

वनरी चीड़ी पड़ी पींजरै, नैणां व्यापी सूल ।
अन्तस में आरो सो चालै, बुरी वेदना मूल ।।
अब नां पांख पसारै
अम्बर में उडग्या चाव गुमान सै
रस-रूत रा संगी ।।२३।।

वेदोजी भाई कर भेळा, करी सगाई त्यार ।
"सैणी रै आगै सरसावै, सुवरण रो संसार ।।
ऊंडी बात विचारो
बाचा मत हारो, बीजानंद रा
वेदोजी, ग्यानी" ।।२४।।

"बाचा देयर वळ नीं हार्‌यो, पूग्यो आप पताळ ।
वाचा दे हरिचंद ना चूक्यो, भयो मुसाण-रुखाळ ।।
पण मरजाद न छोडी
पिरथी अर पाणी पून सुहावणा
सत-सार सिखावै" ।।२५।।

****

"सगपण साँचो नैण-नेह रो और जगत-जजाळ।
नसी बाजै राग-रंगरी, सुर - सरवर री पाळ ॥
हिरदो भाव पिछाणै
जिवडो रस माणै रमती पून मे
यो रग न छूटै" ॥२६॥

"पारवती निज रो वर हेरयो सतवंती गुण ग्राण।
सावतरी रै सत री गाथा, गावै वेद-पुराण ॥
रस री धार निराळी
आदू सू चाली आगै चालसी
मत रोक लगावो" ॥२७॥

बीजानद नै बोल बुलायो, वेदोजी मतिमान।
"एक बरस मे सौ नवचदी, भैंस मेरे घर आण ॥
तो सैणी परणावू
वर रा गुण जाणू बीणा रा धणी
पुरसारथ थारो" ॥२८॥

बीजानद बीणा ले चाल्यो, जाग्या वन रा भाग।
बिरछ-बेल मिल गावण लाग्या, रस बीणा री राग ॥
पछी भीड लगाई
घूरी तज आया वासी बीड रा
नवचंदी नाही ॥२९॥

बीजानद बीणा ले आयो, धन डूँगर रो मान।
कॉकर-कॉकर गावण लाग्यो, मिर्ली बीण सू तान ॥
सुण डूँगर रा वासी
लोट्या चोफेरी धुन रै ध्यान मे
नवचंदी नाहीं ॥३०॥

****

****

बीजानंद बीणा ले आयो, सरस्यो नंदी तीर।
नाचण लागी ल्हैर ताल दे, चिमकण लाग्यो नीर॥
चूणा चरणो भूल्या
घेरो आ दीन्यो बीजानन्द रो
नवचंदी नांहीं ॥३१॥

बीजानंद बीणा ले आयो हिरदै हरख्या खेत।
पान - पान मिल झूम जणायो रस-बीणा रो हेत॥
भूल्या लोग रुखाळी
मारग आ रोक्यो बीजानंद रो
नवचंदी नांहीं ॥३२॥

बाग-बगीचा, म्हैल-माळिया, सुवरण रो संसार।
रतन पदारथ ले परदेसी, भैंस भलां के सार॥
आछी बात विचारी
हिरदै में धारी ऊंची धारणा
बीणा बरदाई ॥३३॥

बीजानंद भरम्यो सो डोलै, गाँव-गाँव रै मांय।
नर नारी अर बाळक मोह्या, रस री बीण बजाय॥
मन ईछया फळ माँगै
पावै नां पावै दुरलभ देस री
नवचंदी सोभा ॥३४॥

धोळा खुर अर धोळो टीको, धोळी पूँछ निचाण।
धोळा थण अर धोळो मूंडो, थरणी भैंस पिछाण॥
या नवचंदी सोभा
विधना री माया पूरी ऊतर्‌याँ
परदेसी पावै ॥३५॥

****

दिन बीत्या अर मास बिताया, रुत आई दे फेर।
नवचंदी ल्यावण परदेसी, गयो लगाई देर॥
सैणी आस लगाया
मारग में रोप्या तीस्या नैण दो
पण बीण न वाजी ॥३६॥

बादळ आया घोर घुमंता, उफणी नंदी प्रीत।
न्यारू काची ल्हैर-ल्हैर मे, बीजानंद रा गीत॥
बूँदा गावण लागी
भूली सी हिरणी भरमैं ध्यान में
ओचक उठ चाली ॥३७॥

आवै जावै मन री ल्हैरण, पून बजाती बीण।
ल्हुकमिचणी सी करती डोलै, प्रीत भई मतहीण॥
पीकर मद रो प्यालो
डूवै इतरावै आपो आप मे
रस बीण दिवानी ॥३८॥

अम्बर मे चिमकै बै आरया, तारा रै परवाँण।
माया री छाया मुळ बोलै, जित-तित जावै ध्यान॥
सत री किरण सुरंगी
अंतर पट आवै जीती जागती
या छिव रतनाळी ॥३९॥

रूंखा मे वो रूप समायो, फूला मे मुसकान।
ऊँचा कर-कर हाथ बुलावै, हरियल रमता पान॥
या हिरदै री माया
सैनी रस डोलै मन रै तार में
या वीणा बाजै ॥४०॥

****

मात पिता री वात न मानी, कुळ री आदू काण।
गांव गुवाड़ी तज कर चाली, सैणी मन रै ध्यान॥
जादू सिर पर छायो
मारग ना पूछै बोलै वैण ना
वा तार पिछाणै॥४१॥

प्रीत दिवानी पांख पसारी, आवै जा वणराय।
ऊँची-ऊँची उडती चालै, आगै आगै जाय॥
या पिरथी तज दीनी
ल्हैरण आ पुगी दूजै लोक में
यो धाम हिमाळो॥४२॥

यो नगराज निराळै रस में, पसर्‌यो अंत न पार।
एक पलक में आवै-जावै, जग रा बरस हजार॥
चालै पून सुरंगी
सीळी सीळासी सीनूं ताप नै
जस वेद वखाणै॥४३॥

बाग-बगीचा, नंदी-नाळा, जग रा सै नीचाण।
च्यारूं-कांनी एक रूप रो, जस गावै वरफाण॥
दूजो रंग न जाणै
लीलै अम्बर में धोळो च्यानणो
दीपै दीपावै॥४४॥

ऊँची-ऊँची सैणी जावै, नीचा सारा भोग।
राग-विराग जगत रा नीचा, नीचा मन रा रोग॥
उण री पलक न हालै
समसुर में चालै सत री जोत सी
रस विरलो जाणै॥४५॥

****

"नवचंदी सौ भैंस बाध दी, वेदो जी रै ठाण।
लैरां-लैरां चाल्यो आयो, सैणी चतर सुजाण।।
ले विसराम जरा सो"
वीणा यों वाजी, वीजानन्द री
परवत री छायां ।।४६।।

धरती गूंजी अम्बर गूंज्यो, अर गूंज्यो वरफाण।
गूंजी पून बीण धुन गूंजी, सैणी मन रै ध्यान।।
ना पग फेर्‌यो पूठो
परवत चढ चाली, धारा प्रीत री
यो नेम निराळो ।।४७।।

वीजानंद री बीण पुकारै, अन्तरतम रै पूर।
मुख ना बोलै नैण न खोलै, प्रेम-राग रो नूर।।
ऊंचो चाल्यो जावै
वीजानंद हारयो कर-कर बीनती
सैणी नां बोलै ।।४८।।

नासवान बीणा के गावै, अविनासी रा गीत।
नैण-राग री बात न पूगै, जा थळ निरमळ प्रीत।।
अम्बर इक रंग छायो
पिरथी फिरती सी लेवै थारणा
यो भेद निराळो ।।४९।।

परभाती आ पून सुरंगी, कण-कण दे रस पूर।
वीजानंद री वीणा बाजै, नैणां टपकै नूर।।
"ओ म्हारी सुगणी सैणी
एकरस्यां पूठी पिरथी पर आव" ।।५०।।

****

रतनाळी कळियां हँस बोलै, कोयल गावै गीत।
बीजानंद री वीणा वाजै, भूल्यो सो-संगीत॥
"ओ म्हारी सुगणी सैणी,
एकरस्यां पूठी पिरथी पर आव" ॥५१॥

रूंखां में रस-रीत समाई, जी भर नाचै मोर।
बीजानंद री वीणा वाजै, अम्बर छाया लोर॥
'ओ म्हारी सुगणी सैणी,
एकरस्यां पूठी पिरथी पर आव" ॥५२॥

झर-झर नीर झरै झरणां रो, चम-चम चिमकै धार।
बीजानंद री वीणा वाजै, भूल्योड़ा-सा तार॥
"ओ म्हारी सुगणी सैणी,
एकरस्यां पूठी पिरथी पर आव" ॥५३॥

सांझ पड़ी सूरज फिर चाल्यो, रूंखां में खगरोर।
बीजानंद री वीणा वाजै, ना हाथां में जोर॥
"ओ म्हारी सुगणी सैणी,
एकरस्यां पूठी पिरथी पर आव" ॥५४॥

चंदरमां री जगमग किरणां न्हावै सौ संसार।
बीजानंद री वीणा वाजै, हिरदै में अंधार॥
"ओ म्हारी सुगणी सैणी,
एकरस्यां पूठी पिरथी पर आव" ॥५५॥

****

नैण थक्या, रस वाणी थाकी, अर अतर रा तार।
वीजानद री वीण न वाजै, पण गूंजै मणकार॥
"ओ म्हारी सुगणी सैणी,
एकरस्यां पूठी पिरथी पर आव" ॥५६॥

****

५४८
काव्य

सोहनी-महिवाल

सिन्ध नदी के इस पार सोहनी अपनी गाय-भैंस चराया करती थी और परले पार महिवाल यही कार्य करता था। एक बार वह मिट्टी के घड़े के सहारे सिन्ध के इस पार आया और उसने सोहनी को देखा तो उसके रूप सौन्दर्य पर मुग्ध हो गया। सोहनी के हृदय में भी उसके प्रति प्रेम जाग्रत हुआ। फलस्वरूप महिवाल का उसके पास बराबर आना-जाना होने लगा। अन्त में महिवाल सोहनी के पिता के यहां नौकर के रूप में रह गया और वहीं नदी-तट पर उनकी गाय-भैंस चराने लगा। परन्तु कुछ समय गुजरा कि सोहनी की बिरादरी के लोगों को महिवाल का वहां रहना उचित प्रतीत नहीं हुआ और वह हटा दिया गया। इस पर महिवाल को सिन्ध के परले पार जाना पड़ा परन्तु वह सोहनी के वियोग को सहन नहीं कर सका। एक रात जब सिन्ध नदी पूरे उफान पर थी तो महिवाल मिट्टी का घड़ा लेकर नदी में उतर गया और तैर कर सोहनी की तरफ जाने लगा। परन्तु किसी कारण से घड़ा मंझधार में ही फूट गया और महिवाल डूबने लगा। ऐसी स्थिति में उसने देखा कि सोहनी स्वयं पानी में तैरते हुए उसके पास आ पहुँची है और जलधारा में उसके साथ मिल गई है।

****

दरिया ए सिन्ध

महिवाल

सोहनी

****

एक पार महिवाळ एकलो, मन रे मारग जाय।
दूजै पार सोहनी सरसै, रस री वीण वजाय॥
गरजै बीच - बिचालै
सिन्धू नद भारी वेग उताळ ले
उफणै - इतरावै ॥१॥

नैण न जावै तीर आगलै, पसर्‌यो भारी पाट।
लागी लीक एक पर दूजी, चल - लहरां री लाट॥
जळ री दुनिया न्यारी
बिगड़ै बण ज्यावै आपो आप में
नव रंग दिखावै ॥२॥

जळचर जीव मगन हो माच्या, रूप घणो विकराळ
माछ्ग-ग्वांगळ री वस्ती में, करै उताळ - उताळ
मन मान्यो रस भारी
विलसै चळ खावै, आ मझधार में
अणगिनत किलोळां ॥३॥

पाणी पून एक रस आया, चंचल चित रै रंग।
रूप नवोनव पल पल धारै, छिण - छिण नई उमंग॥
हिरदो खोल दिखावै
पाणी सरसायो, पून सुहावणी
हिल मिल वतळावै ॥४॥

सूरज री किरणां सरसावै, सुवरण रो संसार
चांद किरण रस-ताण तणावै, ले चांदी रा तार॥
इन्दरजाळ बिछायो
चिमकै चपला सी लहर उतावळी
आवै अर जावै ॥५॥

****

(२)

पाणी रो पट चीर वटावू, आयो परलै पार।
इमरत री नंदी सी निरखी, सरसै रूप अपार॥
नैणा जोत निराळी
मन ही मन गावै समरस सोहनी
लहरा री वाणी ॥६॥

वन विच, दूर जगत सूं फूल्यो, अम्मर फळ रो वाग।
पान-पान मे गावै पंछी, सार सनातन राग॥
कण कण मे रस छायो
हिरदो सरसायो नव रंग रूप मे
कुण मरम पिछाणै ॥७॥

नैणा सूं रस - किरण च्यानणी, नर देही रै माय।
निरखी आज सुफळ या काया, फूल्यो ज्यूं वणराय॥
सोरम सूं गरणायो
इमरत रस प्यायो आपो आपनै
वायू छिक चाली ॥८॥

अंग-अंग में मोद समायो, रोम-रोम संगीत।
नैणा में नवरंग निराळो, प्राण माय रस-रीत॥
पिरथी डगमग डोलै
पीकर मद भूल्यो, निरमळ रूपरो
महिपाळ सुरंगो ॥९॥

रंग सोहनी जगमग दीपै, पारस गुण औतार।
एकर लख्यो रूप रस-नैणा, कंचन चिमक्यो सार॥
तोड़्यो तार न टूटै
अन्तरपट सीम्यो किरण सुहावणी
या मन री माया ॥१०॥

नैणां री डोरी सूं जकड़्यो, दूर देस महिवाळ ।
दरसण-फळ पर करी चाकरी, पूरी करै रुखाळ ।।
छाया सो अनुगामी
सिर पर थिर थापी गागर नीर री
अर नाड़ न हाले ।।११।।

संग सोहणी धेन चरावै, वन-वन कुंज-निकुंज ।
पद-पद पुळकै अंतर काया, बरसावै रस-पुंज ।।
जग नन्दन वन छायो
आयो विसरायो चाव उमंग में
महिवाळ रसीलो ।।१२।।

सुख-नैणां सूं डाळ विलोकै, विगसावै रस फूल ।
हँस-हँस बोलै फूल-चाव कर, जे निरखै पल भूल ।।
अन्तर धार चलावै
आमीं सरसावै कण-कण सोहनी
जग जोग जुड़ायो ।।१३।।

परदेशी रै रोम-रोम में, छिब मुळकै रस घोळ ।
पिरथी पर ज्यूं चांद सुरंगो, मद नैणा री पोळ ।।
आ संगीत सुणायो
हिरदे में नाच्यो चाव चकोर ज्यूं
वो वलि वलि जावैं ।।१४।।

तारां में चमचम कर जागै, एक रूप अर तान ।
किरण-किरण में थिर नैणां री, जोत लगावै ध्यान ।।
ऊंडी-ऊंडी जावै
छेवट ना पावै सागर नीर रो
बा वाट न छोडै ।।१५।।

****

(४)

लोक लाज, कुळ री मरजादा, संसारी जंजाळ।
परलै पार दूर दे पटक्या, प्रेमवीर महिवाळ॥
दूजी बात न जाणै
रुक-रुक सुध आवै सरवस मोहनी
सिर धुन पिसतावै॥१६॥

जिण नैणां यो रूप निहार्‌यो, अब के निरखण जोग।
संसारी सुवरण री खेती, तन रो मन रौ रोग॥
कुण कूड़ो उपजावै
वन में विलपावै भटकै एकलो
महिवाळ दिवानो॥१७॥

जिण कानां रसतान सुणी या, अब के सुणणी ओर।
लोक बैण रा रीता बादळ, अम्बर में भर सोर॥
आवै पूठा जावै
बूंदां कद गावै गीत सुहावणा
वां बिन रस नांही॥१८॥

सारो जग सूनों सो लागै अन्तर घणो उदास।
नैण थक्या, रस काया थाकी, जागै होय विनास॥
मन-ल्हैरां री माया
उठ उठ भाजै सोंयो नींद में
सुपना री छायां॥१९॥

मोती चुगकर मानसरोवर, आयो जगती मांय।
ज्वाला जागी रोम रोम में, पण कांकर ना खाय॥
हंसो पांख पसारी
नैणां में नाची ल्हैर सुहावणी
वा दुनिया न्यारी॥२०॥

****

****

(५)

फड़कै वीज विकट दळ बादळ, वरसै मूसळधार ।
सूंटो अम्बर में सरणावै, घण छायो अंधार ॥
उफणै सिन्धू भारी
चंडी सी नाचै माया नीर री
तन प्राण कंपावै ॥२१॥

सत री जोत हिये में जागी, सह्यो न जाय विछोह ।
कूद पड्यो महिवाळ सिंध में, तज संसारी मोह ॥
चीरण लाग्यो पाणी
घडलै पर बैठ्यो जाणै न्याव में
अन्तर पट खोल्यां ॥२२॥

"चाल चाल ओ मन सैलानी, तज कर ओर विचार ।
पुन्नधाम री जोत सुरंगी, जागै परलै पार ॥
मत तूं वार लगावै
टंटा मिट जावै पाणी पून रा
दरसण रस पीयां" ॥२३॥

"चालणियो पथ में नां हारै, पूगै पुन रै लोक ।
रोम रोम सरसै रस धारा, मन अविचळ गत सोक ॥
दीपै किरण सुरंगी
अन्तर नैणां सूं निरखै रूपसी
निरमळ अविनासी" ॥२४॥

चाल चाल धुन ध्यान रमायां, आ पूग्यो मंझधार ।
जोर पड्यो माटी गळ चाली, काचो घट आधार ॥
फूट्यो जळ रै मांहीं
अम्बर में कड़की बळती वीजळी
सूंटो सरणायो ॥२५॥

****

पैंडं पैंडं पाणी रै मारग, चाल्यो जा पणवीर।
पुरसारथ रो चाव न मानै, वण विपदा री भीर॥
धुन मे ध्यान लगाया
अन्तर में गूंजै एक ज रागनी
"तूं चाल वटावू" ॥२६॥

गरज तरज जवधारा वोली, तो सम मूढ न ओर।
हाथ मार कद रूप-दिवाना, पूगै परलै छोर॥
आधी जोर जणावै
बिजळी वळ खावै वादल ऊमड्या
घड़ियाल घणेरा ॥२७॥

अम्बर रै हिरदै जोरावर, गूंजी पून पुकार।
अण गिणती तो सम जिदवादी, ले डूबी या भार॥
दुनिया नाम न जाणै
आवै अर जावै मन रै मोट में
पाणी री माया ॥२८॥

अंग थक्या जळ जुद्ध जोर मे, भयो सिथिल सो गात।
पण हार्यो ना धन्य वटावू, ओचक फाटी रात॥
प्रगट्यो पुन्न पुराणो
मुळकै वतळावै सनमुख सोहनी
नैणां री भासा ॥२९॥

पलक मारतां वादळ फाट्या, पाणी पून प्रकोप।
मिट चाल्या संसा संसारी, भयो सिंध नद लोप॥
चित मे चैन समायो
अम्मरफळ पायो सुरता सोहनी
महिवाळ तपस्वी ॥३०॥

]